

| | | |
|--------|---------|------------------------------------|
| | चिन्हॉर | अनचिन्हॉर (अपरिचित) |
| | थहाव | अनथहांव (जिसकी थाह न मिले) |
| | बनक | अनबनक (दुश्मनी) |
| | बासा | अनबासा (निवास रहित) |
| | बिसवाँस | अनिबिसवाँस (अविश्वास) |
| | भरोसा | अनभरोसा (अविश्वास) |
| | मेल | अलमोल (बेमेल) |
| | सुनल | अनसुनल (बिना श्रवण किया हुआ) |
| | साँचे | अनसाँचे (बिना विचारे) |
| | हित | अनहित (अहित) |
| अप | अँगहा | अपँगहा (लंगड़ा) |
| | जस | अपजस (अपयश) |
| | पतिहा | अप्पतिहा (जिददी) |
| | सगुन | अपसगुन (अपशकुन) |
| अब/औ | गुन | अवगुन/औगुन (अवगुण) |
| | घट | अवघट/औघट (निर्जन स्थान) |
| | तरना | अवतरना/औतरना (अवतार लेना) |
| आन/आने | घर | आन/आने घर (अन्य गृह) |
| | जात | आन/आने जात (विजात) |
| | तरिया | आन/आने तरिया (अन्य या दूसरा तालाब) |
| | देस | आन/आने देस (विदेश) |
| कु | ठउर | कुठउर (गलत स्थान) |

| | | |
|-----|---------|-------------------------------------|
| | नीत | कुनीत (नियम विरुद्ध) |
| | बेरा | कुबेरा (असमय) |
| | भाव | कुभाव (ईर्ष्या) |
| | पूत | कपूत (कुपुत्र) |
| | मत | कुमत (गलत विचार) |
| | मारग | कुमारग (गलत मार्ग) |
| | संग | कुसँग (गलत संगत) |
| | समे | कुसमे (खराब समय) |
| न | पता | नपता (लापता) |
| | राजी | नराजी (खिन्न, नाराजी) |
| | साना | नसाना (नष्ट होना, प्रचलन रहित होना) |
| बि | घर | बिघर (बेघर) |
| | चेत | बिचेत (बेहोश, अचेत) |
| | जात | बिजात (विजात) |
| | देस | बिदेस (विदेश) |
| बिन | गतगढ़न | बिनगतगढ़न (बेशकल-सूरत) |
| | गुदार | बिनगुदार (गिरी रहित) |
| | गुरमेटल | बिनगुरमेटल (बिना चयन रहित) |
| | चरागन | बिनचरागन (बिना चयन किए) |
| | पुछंता | बिनपुछंता (बिना पूछ-परख के) |

- (iii) **भिन्न उपसर्ग लगाकर** – कभी-कभी उपसर्ग युक्त शब्दों का विलोम उससे भिन्न उपसर्ग लगाकर भी किया जाता है। किंतु ऐसे उपसर्गों की संख्या छत्तीसगढ़ी में बहुत कम है –

| | |
|--------------|---|
| एकरंगी | बिदरंगी (विविध रंगों वाला) |
| एकावँट | गुरावँट (विनिमय विवाह) |
| एबखत | आनबाखत (अन्य समय) |
| एदरी | आनदरी (दूसरी बार) |
| अगियानी | सगियानी (समझदार) |
| जियत बरेंडी | मरेबरेंडी (पति के मृत्युपरांत दूसरा पति बनाया हो) |
| बड़बोला | एकबोलिया (मितभाषी) |
| बिनियाँ छेना | थोपना छेना (हाथ से बनाया हुआ कंडा) |

- (iv) **भिन्न प्रत्यय जोड़कर** – कुछ शब्दों में जुड़े प्रत्यय के स्थान पर भिन्न प्रत्यय जोड़कर भी विलोम शब्द बनाते हैं। जैसे –

| | |
|-----------|---|
| कुलतारक | कुलबोडुक (कुल का नाम डुबाने वाला) |
| कुलवंता | कुलकलंक/कुलघातिया (कुल को बदनाम करने वाला) |
| जातबाहिर | जातवाला (सजातीय) |
| देहछोड़वा | देहगिरा (प्रायः दूसरे से चिपक कर रहने वाला) |
| मइलछटहा | मइलखोरहा (धूप चिपकाने वाला) |
| मुँडउघरी | मुँडदँक्की (सिर झुकाकर स्वीकार करने वाला) |
| मुँहलुकवा | मुँहछोर (जिसमें वाक्-संयम का अभाव हो) |
| हँथजोड़वा | हँथछोर (जो तत्काल मारपीट के लिए तैयार हो जाता है) |

(v) सामासिक शब्दों में प्रथम शब्द का परिवर्तन करके

| | |
|----------------|---|
| अपने दुवारी | परदुवारी (दूसरे का द्वार) |
| एकमइहाँ | दुमइहाँ (दो मुँह वाला 'चुल्हा') |
| करिया – बादर | पँड़री-बादर (श्वेत बादल) |
| खारराख | माटीराख (मिट्टी राख) |
| ननंद-भउजई | देवर-भउजई (देवर – भाभी) |
| पनियों-अंकाल | झुक्खा – अंकाल (सूखा आकाल) |
| पहाती – सुकुवा | बुड़ती – सुकुवा (सूर्यास्त काल का शुक्र तारा) |
| बाउँत – पानी | पकौना – पानी (फसल पकाने के लिए खेतों में डाला जाने वाला जल) |
| मँहतारी – बेटा | बाप – बेटा (पिता-पुत्र) |
| लरीबाती | फूलबाती (फूलबत्ती) |
| सगबेटा | हिँगलबेटा (पत्नी के पूर्व पति द्वारा उत्पन्न पुत्र) |
| सतबचन | झूठबचन (असत्य वचन) |

(vi) ऊनार्थक या न्यूनार्थक शब्द द्वारा – जिससे किसी वस्तु की लघुता का ज्ञान हो उसे ऊनार्थक या न्यूनार्थक शब्द कहते हैं। न्यूनार्थक शब्द भी अकारवाची विलोमार्थक शब्द होते हैं। जैसे –

| | |
|--------|--|
| अँगेठा | अँगेठी (जलती हुई पतली लकड़ी) |
| आरा | आरी (लकड़ी चीरने का एक औजार) |
| कंठा | कंठी (काष्ठ की एक मनिका) |
| कंसा | कंसी (धान की बाली का छोटा-छोटा टुकड़ा) |

| | |
|---------|---|
| कटोरा | कटोरी (एक छोटा पात्र) |
| करसा | करसी (मिट्टी का बना लाल रंग का घड़ा) |
| कुढ़ेना | कुढ़ेनी (ढेरी) |
| कुरचा | कुरचुल (लकड़ी, लोहा, काँच आदि का छोटा टुकड़ा) |
| केरा | केरी (छोटे आकार का केला) |
| कोपरा | कोपरी (छोटी परात) |
| खटिया | माँची (छोटी खाट) |
| खँचा | खँचकुल (छोटा गड्ढा) |
| खूँटा | खूँटी (कील) |
| खेखसा | खेखसी (सब्जी के काम आने वाला एक फल) |
| खोक्सा | खोक्सी (एक मछली) |
| गधरा | गधरी (घड़ा) |
| गट्ठा | गठरी (गट्ठर) |
| गाड़ा | गाड़ी (बैलों द्वारा खींची जाने वाली गाड़ी) |
| गैती | कुदारी (कुदाली) |
| गोरसा | गोरसी (मिट्टी का बना कटोरानुमा पात्र) |
| चरखा | चरखी (तकली) |
| चरिहा | टुकनी (टोकरी) |
| चाँवरा | चाँवरी (चबूतरा) |
| जाँता | जतली (चक्की) |
| डोंगा | डोंगी (नाव) |
| डोर | डोरी (रस्सी) |
| ढोरगा | ढोरगी (प्राकृतिक रूप से बनी नाली) |
| तरिया | डबरी (छोटा तालाब) |
| थारी | थरकुलिया (थाली का छोटा रूप) |

| | |
|--------|---------------------------------|
| पढीना | लपचा (पढीना नामक मछली का बच्चा) |
| बसला | बसली (एक धारदार छोटा हथियार) |
| बॉबर | बॉबी (मछली विशेष) |
| लोड़हा | लोड़ही (सिल का छोटा बट्टा) |
| हँसिया | इल्ली (छोटा हँसिया) |

अनेक शब्दों के स्थान पर एक शब्द

| हिन्दी | छत्तीसगढ़ी |
|--|--|
| <p>कभी-कभी किसी विस्तृत विचारों या भावों को व्यक्त करने के लिए एक शब्द (पद) या वाक्यांश का प्रयोग किया जाता है। ऐसे शब्दों या वाक्यांशों के प्रयोग से भाषा में भावों की गंभीरता, सुदृढ़ता एवं प्रभाव तो बढ़ते ही हैं, कम शब्दों के उच्चारण से श्रम और समय दोनों की बचत भी होती है। भावभिव्यक्ति की इस रीति को सामासिक पद्धति भी का जाता है। ऐसे शब्दों के प्रयोग के लिए आवश्यक है कि लेखक या वक्ता का शब्दों पर पूर्ण अधिकार हो, तभी कम शब्दों का प्रयोग 'गागर में सागर भरना' कहावत को चरितार्थ किया जा सकता है।</p> <p>यहाँ पर इसी प्रकार के कुछ शब्दों के उदाहरण दिये जा रहे हैं -</p> | <p>कभु-कभु कोनो घटना, बिचार नइते भाव ला गंभीर अऊ फरिया के प्ररगट करे बर एके किसम के सब्द बोले जाथे। येकर ले कम सब्द में जादा असर अऊ भाव भरे बात केहे जाथे।</p> |
| छत्तीसगढ़ी सब्द | छत्तीसगढ़ी/हिन्दी वाक्यांश |
| अँकवार | — दूनों बइहाँ ला पसारे ले कोनो जिनिस हा जतका अकन धराथे। (दोनों बाहों को फैलाकर पकड़ने से प्राप्त वस्तु की मात्रा) |
| अँचरी | — कीरा मन के काँटे ने गिरे धान के बाली के छोटे-छोटे कुटका। (कीड़ों के काटने से गिरे धान की बाली के छोटे-छोटे टुकड़े) |
| अँजेरी | — ठेले कस गोठियाए के ढंग। (व्यंग्यात्मक शैली में बोलने की क्रिया या भाव) |
| अंकलहा | — अंकाल बखत के। (अकाल के समय का) |

| | |
|-----------------|--|
| अकसरिया/अकतरिया | — किसनहिन मन के चौमासा मा पहिरे के चप्पल। (कृषक-औरतों की विशेष चप्पल जिसे वर्षाकाल में पहनते हैं) |
| अगमजानी | — बिन बताए घटना ला सही-सही बतइया या मन के बात ला जनइया। (बिना जानकारी दिये घटनाओं को सही-सही बताने वाला या मन की बातों को जानने वाला) |
| अगरी | — आँखी अउ कान के बीच वाला भाग। (आँख और कान का मध्य भाग) |
| अचवइन | — खटिया के गोड़तरिया मा बँधाए डोरी। (चारपाई के पैताने की रस्सी)। |
| अछाड़ | — बड़लागाड़ी के बीच मा लगे लंबा अउ मोटा लोहा जउन मा चक्का लगथे। (बैलगाड़ी के मध्य में लगाया जाने वाला एक लंबा एवं मोटा लोहा जिसमें पहिये लगे होते हैं) |
| अछीम | — जउन हा छिमा के लइक नइ राहय। (जो क्षमा के योग्य न हों) |
| अजारा | — बिना नापे-तउले। (बिना नाप-तौल किए) |
| अटकपारी | — बेर के संगे-संग घट-बढ़ होवइया मुँड़ी पीरा। (धूप के आधार पर घटने-बढ़ने वाला सिर दर्द) |
| अठवाही | — नवरात पाख मा आठे के भोग। (नवरात्रि पक्ष में अष्टमी का भोग) |
| अड़कड़ी | — बड़ भगइया मवेशी के गोड़ मा बाँधे जाथे तउन लकड़ी। (अधिक भागने वाले जानकर के पैरों पर बाँधी जाने वाली लकड़ी) |
| अड़गड़ | — कोठार के मुहाँटी मा मवेशी मन ला छेके बर लगाए जाथे तउउन बाँस। (गोशाला में पशुओं को रोकने के लिए दरवाजे पर लगाया जाने वाला बाँस) |
| अड़गसनी | — ओनहाँ झुखोए के बाँस नइते तार। (कपड़ा सुखाने का बाँस या तार) |
| अढ़वा | — घर बुता करइया लइकुसहा नौकर। (घरेलू कार्य करने वाला कम उम्र का नौकर) |
| अथानी | — अथान धरे के माँटी क बने करिया हाँड़ी। (अचार रखने के लिए प्रयुक्त मिट्टी का बना एक काला पात्र) |
| अदियावन | — जउन ला देख के दया आथे। (जिसे देखकर दया उत्पन्न हो) |
| अधिया | — उपज के आधा हिस्सा मा दूसर ला कमाए खातिर खेत देय के रीत। (कृषि भूमि को उसके उत्पादन के आधा हिस्से पर दूसरे को कमाने के लिए देने की एक पद्धति) |
| अधेड़ | — आधा उमर के। (आधी उम्र का) |
| अनठेहरा | — तिरछा-तिरछा देखइया। (वक्र दृष्टि वाला) |
| अनथहाव | — जउन ला जाने नइ जा सके। (जिसे जाना नहीं जा सकता) |
| अनवासना | — नवाँ जिनिस ला बउरना। (नई वस्तु का उपयोग करना) |
| अनवासा | — जिहाँ बासा नइ होवय। (जहाँ निवास न होता हो) |

| | |
|------------|---|
| अनवासा | – बिन सुने। (बिना श्रवण किया हुआ) |
| अनाकानी | – कोनो बुता बर कोताही करई। (किसी कार्य को जान बूझकर टालने की क्रिया) |
| अमानी | – रोजी मा कमाथे तउन बुता। (दैनिक मजदूरी पर किया जानेवाला कार्य) |
| अरिया | – खीला लगे लउठी। (लोहे की कील लगी हुई लाठी) |
| अवार | – एक घाँव के जोतई। (एक बार की जोताई) |
| अहरा | – छेना आगी के ढेरी। (कंडे की आग का ढेर) |
| आँतर | – जमे रथे तउन दही। (दही का थक्का)/हल से जुताई करते समय छेदे भाग |
| आँवर | – जचकी के बाद के फूल (प्रसव के बाद का फूल) |
| आवों | – माँटी के भाँड़ा पकोए के भट्ठी। (मिट्टी के बर्तनों को पकाने की भट्ठी) |
| इट्टे | – खेती करे बर पइसा के अभाव मा बीरता काँट के बनी के बलदा अनाज देय के रीत। (कृषि करने के लिए पैसे के अभाव में फसल काटकर मजदूरी के बदले अनाज देने की रीति) |
| उखरा | – गुर के पाग मा सौंदाए लाई। (गुड़ के सिर से पगी लाई) |
| उटंग | – कांचे के बाद ओनहाँ के टुटई। (धुलाई के पश्चात कपड़े का सिकुड़ना) |
| उढ़रिया | – बिन बिहाव करे आने मनसे ला गोसइयाँ मान के ओकर संग रहई। (बिना विवाह किये पर पुरुष को पति स्वीकार कर साथ रहने की क्रिया) |
| उतेरना | – खड़े बीरता वोल छिपरनहाँ खेत मा बीज छींतना। (खड़ी फसल वाले गीले खेतों में बीज छिड़कना) |
| उधवा | – पैराँट मा दवे अनाज के दाना मन ला सकले के बुता। (पैरावट में दवे अनाज के दानों को संचित करने की क्रिया) |
| उपरिया | – ऊपरे-ऊपर ला देखइया। (अस्थिर दृष्टि वाला) |
| उरला | – बइलागाड़ी के पिछोत मा बजन के जादा होए ले आघू कोती टँगा जथे तउन स्थिति। (बैलगाड़ी के पीछे भाग में अधिक भार के कारण सामने भाग के ऊपर उठ जाने की स्थिति) |
| उलफुलहा | – बड़ई सुन के गदगद होवइया। (बड़ाई सुनकर अति उत्साहित होने वाला) |
| उलेंदापूरा | – तेज धार के संग अवइया भयंकर पूरा। (जिसकी एक ही संतान हो) |
| ओकार | – मुसवा नइते आने कीरा-मकोरा ह कोड़े रथे तउन माँटी के चूरा। (चूहे या अन्य कीड़े-मकोड़े द्वारा खोदकर निकाला गया मृदा चूर्ण) |
| ओरछई | – सुवागत खातिर मुहाँटी मा पानी डरई। (स्वागत के लिए प्रवेश द्वार पर पानी डालने की क्रिया) |

| | |
|----------|--|
| ओल्होत | — मवेशी मन ला रेंगाए खातिर देय जाथे तउन अवाज। (जानवरों को चलाने के लिए दी जाने वाली आवाज) |
| ओसहा | — छेवरिया मन ला खवाए बर जरी-बूटी ले बने ताकत के दवाई। (प्रसूति का स्त्रियों को खिलाने के लिए जड़ी-बूटी से बनी पौष्टिक औषधि) |
| कँदियाना | — पानी नइते चिखला के कारन हाँत-गोड़ मा घाव होना। (पानी या कीचड़ के कारण हाथ-पैर में घाव होना) |
| कंसहा | — डारा-खाँधा वाले पौधा। (अनेक शाखाओं से युक्त पौधा) |
| कइथला | — निच्चट घोंघटहा अउ चिरहा (ओनहाँ)। (अधिक गंदा एवं फटा-पुराना (कपड़ा)) |
| कछेरिया | — कछेरी के बुता करइया। (कचहरी का कार्य करने वाला) |
| कजरा | — करिया आँखी वाला। (काली आँखों वाला) |
| कठलइया | — पेट के फूलत ले हँसइया। (हँसते-हँसते लोट-पोट होने वाला) |
| कड़हा | — जउन मा कीरा पर जाए रथे। (जिसमें कीड़े पड़ गए हों) |
| कनघटोर | — सुन के घलो नइ सुने के बहाना करइया। (सुनकर भी अनसुना करने वाला) |
| कनमनहाँ | — घेरी-बेरी मुँड़ी ला झटकरइया मवेशी। (बार-बार सिर झिटकने वाला पशु) |
| कपटहा | — झूठ-मूठ के बेवहार करइया। (मिथ्या व्यवहार करने वाला) |
| कपिला | — मुँड़-गोड़ ले करिया रंग के गाय। (सिर से पैर तक काले रंग की गाय) |
| कबार | — धान के कटाए पौधा। (धान का कटा हुआ पौधा) |
| कमासू | — ओ भुइयाँ जेमा खेती करे जात हे। (वह भूमि जिस पर कृषि की जा रही हो) |
| कमासू | — ओ भुइयाँ जेमा खेती करे जात हे। (वह भूमि जिस पर कृषि की जा रही हो) |
| करछटहा | — करियहा बानी के। (हल्के काले रंग का) |
| करवाही | — नाँगर चलाए ले उपके माँटी के ढेला। (हल चलाने पर निकलने वाला मिट्टी का कड़ा टुकड़ा) |
| कलोर | — पहिली घाँव गाभिन होवइया गाय। (प्रथम बार गर्भिणी होने वाली गाय) |
| कानी | — खाँसड़ा अउ गरदेवाँ ला जोड़थे तउन होरी। (जानवरों की लगाम के एक छोर में लगी वह रस्सी जो जानवरों के गले में लगी रस्सी को जोड़ती है) |

| | |
|-------------|--|
| किलबिलई | — कमती जगा मा अनसम्हॉर भीड़ होय के स्थिति। (कम जगह पर अत्यधिक भीड़ होने की स्थिति) |
| कुँवरकलेवा | — बिहाव मा भाँवर के बाद बिसेस सनमान खातिर दुलहा ला खवाए जाथे तउन पकवान। |
| कुँवरबोड़का | — गजब उम्मार वाला कुँवारा टूरा। (अधिक उम्र का अविवाहित युवक) |
| कुकरी-उड़ान | — थोरकिन के खुसी नइते बल। (अल्पकालिक उत्साह या ताकत) |
| कुटहा | — बिक्कट मार नइते गारी खवइया। (अधिक मार या गाली खाने वाला) |
| कुड़बुड़ई | — धीम आवाज नइते अटपट भाखा मा बोलई। (धीमी आवाज या अस्पष्ट शब्दों में बोलने की क्रिया) |
| कुलबोरुक | — कुल के नाँव बोरइया। (कुल का नाम डुबाने वाला) |
| कोड़ान | — मिंजई बेखन पैर कोड़े के बुता। (मिंजई के समय धान की पुआल को पलटने की क्रिया) |
| कोरहा | — कोरा मा रहे के आदी। (गोद में रहने का आदी) |
| कोल्लर | — बइलागाड़ी के टाटी के बरोबर भराए जिनिस। (बैलगाड़ी के किनारों में बाँस आदि से बनाए गए घेरे के बराबर सामान की मात्रा) |
| खक्खी | — खए बर हमेसा ललाय रहइया। (खाने क लिए सदा लालायित रहने वाला) |
| खटकार | — रोक-ठोक बोलइया। (सच्ची-कड़ी बातें कहते वाला) |
| खबड़ा | — घेरी-बेरी या बिक्कट खवइया। (बार-बार या अधिक खाने वाला) |
| खरिकाडॉर | — गाँव के बाहिर मा मवेशी मन लाल सकेले के जगा। (गाँव के बाहर पशुओं को एकत्रित करने का स्थान) |
| खादर | — बड़ बेखन ले पानी सकलाय रथे तउन जगा। (देर तक पानी संचित रखने वाला भू-भाग) |
| खुरी | — अकरस पानी मा खेत के जौतई। (आकस्मिक वर्षा से खेत की जोताई) |
| खुराजमोंगी | — सरखाए के बुता। (प्रमाणित करने की क्रिया) |
| खोड़हा | — पेड़ मा बने खोधरा। (वृक्ष का खोखला भाग) |
| गड़हा | — बइलागाड़ी मा कोनो जिनिस ला लनइया-लेगइया नइते अवइया-जवइया। (बैलगाड़ी में सामान ढोने या यात्रा करने वाला) |
| गदेली | — हैंथौरी के उभरे माँस वाला भाग। (हथेली का उभरा हुआ मांसल भाग) |
| गफेलना | — घेंच ला धर के धकियाना। (गला पकड़ कर धक्का देना) मुफ्त में मिलने पर गपागप खाना |

| | |
|---------|---|
| गरी | — मछरी फँसाए के काँटा। (मछली पकड़ने का काँटा) |
| गरेगा | — डूमर पेड़ मा हावा के टकराए ले निकले भयंकर आवाज। (वायु के गूलर वृक्ष से टकराने पर उत्पन्न गंभीर ध्वनि) |
| गवना | — बिहाव के बाद बिदाई के एक रसम। (नव-विवाहिता को दी जाने वाली बिदाई) |
| गाभी | — खेत जोतत खानी पहिली हरिया के छूटे भाग जउन ला दूसर हरिया के संग जोते जाथे। (जोते जाने वाले खेत का वह अवशिष्ट भाग जिसे दूसरे चरण में पूरा किया जाता है) |
| गावा | — चिरइ मन हा खाए दाना ला नरी कना जमा करके राखथे तउन थैली। (पक्षियों द्वारा चुगे हुए दानों को गले क पास जमा करके रखने की थैली) |
| गिरमा | — मवेसी मन ला बाँधे के डोरी। (जानवरों को बाँधने की रस्सी) |
| गुखरू | — तरपौरी मा काँटा गड़े ले बने गठान। (पैर की तली में काटा चुभने से बनी गाँठ) |
| गुराँवट | — अदला-बदली बिहाव। (विनियम विवाह) |
| गुलमा | — एक मोट्ठा डोरी जेकर एक मुँड़ी मा आगी सिपचाके राखे जाथे। (एक मोटी रस्सी जिसके एक सिरे पर आग लगाकर रखी जाती है) |
| गेरवाँ | — मवेसी के गर मा बाँधे जाथे तउन डोरी। (पशुओं के गले में बाँधी जाने वाली रस्सी) |
| धुमनी | — कलेचुप रहइया (माईलोगिन)। (चुप रहने वाली महिला) |
| घेघरी | — दार वाले बीरता के मिंजई करे मा अधफुटहा नइते बिनफूटे फर। (दलहनी फसल की मिंजाई करने पर अधफूटी या बिना फूटी हुई फल्ली) |
| घउहा | — जेकर तन मा बारो महिना घाव रथे। (जिसके शरीर में सदा घाव रहता है) |
| चउथिया | — बिहाव के बाद दुलहिन ला लेगे बर ओकर मइके ले अवइया बरात। (विवाहोपरांत वधू को वापस ले जाने के लिए उसके मायके से आने वाली बारात) |
| चटकारना | — जीभ अउ मुहूँ के ऊपरी तल्ला के सहयोग ले अवाज निकालना। (जीभ और तालू की सहायता से ध्वनि निकालना) |

| | |
|-----------|---|
| चढ़ाव | – बिहाव बखत दुलहा डाहर ले भेजे गहना, ओनहाँ अउ सिंगार के जिनिस। (विवाह के समय वर पक्ष से भेजे जाने वाले आभूषण, वस्त्र एवं अन्य श्रृंगारिक वस्तुएँ) |
| चबेना | – समे काँटे बर नइते मुहूँ के सुवाद बदले खातिर खाथे तउन खई। (समय काटने या मुँह का स्वाद बदलने के लिए खाया जाने वाला खाद्य पदार्थ) |
| चमकुटवा | – बहूत कूद-फाँद करइया। (अधिक उछल-कूद करने वाला) |
| चमरछौकन | – झप ले नइ सिराय तइसन समसिया। (जल्दी समाप्त न होने वाली उलझन) |
| चरखाडॉड़ | – खुसियार पेरे के जगा। (गन्ना पेरने का स्थान) |
| चर्चा | – पेरौड़ा के चेम्मर छोलटी। (वृक्ष के तने की कड़ी छाल) |
| चिलउटी | – तात भाँड़ा मा धरे के फरिया। (गर्म बर्तन को पकड़ने का कपड़ा) |
| चुरेना | – माँटीराख मा चुरोए ओनहाँ। (मिट्टी राख डालकर खौलाए गए कपड़े) |
| चेरियाना | – आमा मा चेर बँधना। (आम की गुठली में कवच बनना) |
| छटपटइया | – बियाकुल होवइया। (व्यग्र होने वाला) |
| छटारा | – मवेशी मन के गोड़ के मार। (पशुओं के पैर की मार) |
| छरवट | – बाहना मा छरे। (ओखरी में कूटा हुआ) |
| छिटहा | – परसाद भर के (रंग वाला बूंदी वाले) बनाए लाडू। (प्रसाद भर कर रंगीन बुंदियों से बनाया जाने वाला लड्डू) |
| छेपकहा | – चेपटा नाक वाला। (चपटी नाक वाला) |
| जपर्रा | – बिक्कट सुतइया। (अधिक सोने वाला) |
| जिठौत | – कुराससुर के बेटा। (जेठ का पुत्र) |
| जियतबरेडी | – अइसन सुवारी जउन हा अपन मरद ला छोड़ के दूसर मरद बना डरे हे। (वह स्त्री जिसने अपने पति को छोड़कर दूसरा पति बना लिया हो) |
| जीवबरार | – जीव बचाए खातिर गाँव के देवी-देवता मन के पूजा बर बमाँगथे तउन बरार। (प्राण-रक्षा के लिए ग्राम्य देवी-देवताओं की पूजा के निमित्त माँगी जाने वाली दान-राशि) |

| | |
|------------|---|
| जुअतिया | — करिया रेसम के डेरा। (काले रंग का रेशमी डोरा) |
| जुठरइया | — जूठा करइया। (जूठा करने वाला) |
| जुड़वास | — माता के सांति खातिर करथें तउन पूजा। (माता की शांति के लिए की जाने वाली पूजा) |
| जेठासी | — बड़े भैया ला बँटवारा मा देथे तउन उपरहा खेत। (ज्येष्ठ भ्राता को बटवारे में दी जाने वाली अतिरिक्त जमीन) |
| जेवनासा | — बरात ठहराय के जगा। (बरात ठहराने का स्थान) |
| झकोरा | — चौमासा के जोरलगहा हावा। (वर्षा ऋतु की वेगपूर्ण हवा) |
| झिरसना | — थोरिक समे से फुसुर-फासर पानी। (पानी की अल्पकालिन हल्की फुहार) |
| झीक-फापड़ा | — बन-बूटा मा तोपाय खोचका-डीपरा भुइयौं। (घास से आच्छादित ऊबड़ खाबड़ धरातल) |
| झुठलंगरा | — अब्बड़ लबारी मरइया। (अधिक झूठ बोलने वाला) |
| टनटनाना | — घाव के सपूरन पाकना। (घाव का पूर्णतः पकना) |
| टसकना | — कलेचुप चले जाना। (चुपचाप खिसकना) |
| टेचरहा | — अँजेरी बोलइया। (व्यंग्य वचन बोलने वाला) |
| टेटरा | — आँखी के पुतरी मा बनथे तउन सफेद गठान। (आँख की पुतली में बनने वाली सफेद गाँठ) |
| टोटका | — अनहोनी ले बाँचे खातिर फूँकाझारा करवाना। (अनिष्ट के निवारणार्थ किया जाने वाला तांत्रिक अनुष्ठान) |
| ठग-फुसारी | — लबारी मार के धन हड़पई। (झूठ बोलकर धन हड़पने की क्रिया) |
| ठुँठरना | — पेड़ के खाँधा मन ला काँटना। (वृक्ष की शाखाओं को काटना) |
| ठौरियइया | — एक जगा एकठ्ठा करइया। (एक स्थान पर संचित करने वाला) |
| डँगनी | — खेत नापे बर निसचित लंबान वाला बाँस। (खेत नापने के लिए प्रयुक्त निश्चित लंबाई का बाँस) |
| डड़ोरिया | — दू एलंग मा ढरहा छान्हीं। (दो दिशाओं में ढाल वाला छाजन) |
| जमरुवा | — बघवा के पीला। (बाघ का बच्चा) |
| डहडहई | — आगी के डाह। (आग की जलन) |
| डिपरा | — भुइयौं नइते खेत के ऊँच भाग। (धरातल या खेत का ऊँचा भाग) |

| | |
|-------------|--|
| डीही | — ओ डिपरा जेमा पहिली बसे गाँवे क चिन्हाँ मिलथे। (वह टीला जिसमें पूर्व में बसे गाँव का अवशेष मिलता है) |
| ढाँकना | — एके साँस मा पीना। (एक ही साँस में पीना) |
| ढोलकहा | — ढोल बजइया। (ढोलक बजाने वाला) |
| तखियइया | — जाँच-परताल करइया। (जाँच-पड़ताल करने वाला) |
| तिजनाहँवन | — काठी के तीसर दिन के नाहँवन। (मृतककर्म के तीसरे दिन का स्नान) |
| तिजहारिन | — तीजा रहइया। (हरितालिका व्रत रहने वाली) |
| तितरा | — तीन झन नोनी के पाछू जनम लेवइया बाबू। (तीन लड़कियों के बाद जन्म लेने वाला लड़का) |
| तिहरा | — तीन पुरुत वाला। (तीन पत्नी वाला) |
| तीरखा | — कोनो जिनिस ला मढ़ाए खातिर कोठ मा गड़ियाए पथरा। (दीवार में उभार कर लगाया गया वह पत्थर जिस पर सामान रखा जाता है) |
| थनवार | — घोड़ा मन क देख भाल करइया। (घोड़ों की देखभाल करने वाला) |
| थुथेलना | — लात ले लतेलना। (पैर से ठोकर मारना) |
| दरबा | — दू ठन कोठ के बीच के खाली जगा जेमा टुटहा-फुटहा जिनिस मन ला फटिक दे जाथे। (दो दीवार के मध्य का वह छोटा स्थान जिसमें खराब वस्तुओं को फेंक दिया जाता है) |
| दहरा | — पानी भराए खइहा जगा। (जलमग्न खाई) |
| दाब | — मींजे के बाद बिन ओसाए अनाज के ढेरी। (मिंचाई के बाद बिना उड़ाए हुए अनाज की ढेरी) |
| दुघेरा | — कोनो मनखे क रहवास गाँव ला छोड़ के दूसर गाँव मा अउ खेती होना। (किसी व्यक्ति के निवास ग्राम के अतिरिक्त दूसरे ग्राम में और कृषि भूमि होना) |
| दुधरू | — दूध के रंग के। (दूध के रंग का) |
| दोखहा | — हरदम टोंका — टांकी करइया। (हमेशा टोकने वाला) |
| दोबला/दोगला | — लबारी मरइया। (झूठ बोलने वाला)/दो तरफ की बातें करने वाला |
| धरसा | — बइलागाड़ी के रावन। (बैलगाड़ी का रास्ता) |

| | |
|-----------|---|
| धरिहारिन | – ईटा मन ला झुखोय बर लेगइया माईलोगिन। (ईटो को सुखाने के लिए ले जाने वाली स्त्री) |
| धिंगरा | – ऊँच-पूर अउ मोट्ठा बदन वाला। (शारीरिक रूप से ऊँचा और मोटा) |
| धुमान | – कोनो मनखे क मरे ले गाँव मा मनाए जाथे तउन दुख। (किसी व्यक्ति की मृत्यु पर मनाया जाने वाला ग्राम – शोक) |
| धोवन | – जूठा बरतन– भाँड़ा के धोवल पानी। (जूठे बर्तनों को धोया हुआ पानी) |
| नकडेवरा | – लंबा नाक वाला। (लंबा नाक वाला) |
| नकरोनहाँ | – बात-बात मा दोख देखइयो अउ सिकाएत करइया। (बात-बात में दोष निकालकर खिन्न होने और शिकायत करने वाला) |
| नटइया | – जबान के निभाव नइ करइया। (मुकरने वाला) |
| नरेड़ी | – टोंटा के आघू वाला भाग। (गले का सामने वाला भाग) |
| नारिक | – टुटहा-फुटहा ला सुधार के बनाए बरतन। (पुराना सुधारा हुआ बर्तन) |
| निंगऊ | – नींगे के लइक। (प्रवेश करने योग्य) |
| निपोरवा | – बिककट के हँसइया। (अधिक हँसने वाला) |
| निर्याँइक | – निर्याँव करइया। (न्याय करने वाला) |
| निसत्ता | – जउन ला दूसर ऊपर भरोसा नइ राहय। (जिसे दूसरे पर विश्वास नहीं रहता) |
| नुनचरा | – बिना तेल वाले आमा के अथान। (बिना तेल डाले बनाया गया आम का अचार) |
| नेमहाँ | – नीत- धरम के सपूरन निभाव करइया। (धर्म और नियमों को कट्टरता पूर्वक पालन करने वाला) |
| नेरना | – घर मा छान्हीं छाए बर भदरी पीटना। (मकान में खप्पर छाने के लिए बाँस की खपच्चियों का आधार बनाना) |
| नेवतहार | – नैवता बँटइया। (निमंत्रण बाँटने वाला) |
| नोखियई | – कोनो बुता ला करवाए खातिर घेरी-बेरी मनई। (कार्य-विशेष को कराने के लिए बार-बार मनाने की क्रिया) |